Lecture-1

Topic- Role of religion in Indian Politics

Degree-II(Hons.) Paper-3

Date-23-6-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

भारतीय राजनीति पर धर्म का प्रभाव :-
(Impact of Religion on Indian politics)

भारत के संविधान के प्रस्तावना में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। भारतीय संविधान ने धर्म का भेदभाव का भेदभाव किए बिना समस्त नागरिक को समान अधिकार प्रदान किये हैं। भारत में अपना कोई राज्य-धर्म नहीं है अर्थात भारत में राजनीति और धर्म को एक-दूसरे से पृथक किया गया है।

भारत के संविधान निर्माताओं द्वारा सार्वभौमिक मताधिकार को लागू करना भी एक तरह से वर्गनिरपेक्ष दृष्टि को बढ़ावा देना ही था। सभी वर्गों का समान रूप से सम्मान करने का तरीका अपनाया गया। इस प्रकार विशेष कर उन नेताओं को जो सरकार के अंदर थे वर्ग के आधार पर लोगों के बीच अपनी पहचान बनाने का अवसर प्राप्त हो गया।

इस पहचान का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्ष थे और इसी आधार पर जनता से मतों के लिए भी कहा जाता। उदाहरण के लिए कांग्रेस ने मुसलमानों को उनकी धार्मिक पहचान को सुरक्षित बनाये रखने के लिए इस आधार पर आश्वस्त किया कि वे कांग्रेस का समर्थन करते रहे। इसी और नेहरू युग के दौरान भी जातियों का

उद्घाटन करने के समय नारियल को तोड़ा गया तथा सार्वजनिक आयोजनों के अवसर पर राजनीतिक नेताओं ने अपने माथे पर तिलक धारण किये।

इस प्रकार एक ओर मुसलमान के मतों को प्राप्त करने के लिए शासकों ने अपनी कुंठाओं का इस्तेमाल किया और दूसरी ओर ठीक उसी समय में हिन्दुओं को खुश करने के लिए समर्पण करते रहे हैं तथा हिन्दू प्रतीकों का सार्वजनिक रूप से में प्रदर्शन करते रहे हैं। इस विष के बीजों का रोपण नेहरू के समय में ही हो गया था। इसने वृक्ष का आकार इंदिरा गान्धी के समय ग्रहण किया। इस वृक्ष पर फूल राजीव गान्धी के शासनकाल में लगे तथा फल नरसिम्हा राव के शासन में पके और आज भी वृक्ष हरा-भरा व फलदायी अवस्था में विद्यमान है।

CHAPTER CONTINUES